Tatva charcha
Ek Shuruvaat

अक्षय-तृतीया पूजन

रचयिता - श्री राजमलजी पवैया कृत

प्रस्तुति - तत्वचर्चा

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

(तांटक)

अक्षय-तृतीया पर्व दान का, ऋषभदेव ने दान लिया।
नृप श्रेयांस दान-दाता थे, जगती ने यशगान किया।।

अहो दान की महिमा, तीर्थंकर भी लेते हाथ पसार।
होते पंचाश्चर्य पुण्य का, भरता है अपूर्व भण्डार।।

मोक्षमार्ग के महाव्रती को, भावसहित जो देते दान,
निजस्वरूप जप वह पाते हैं, निश्चित शाश्वत पदनिर्वाण।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

(तांटक)

दान तीर्थ के कर्ता नृप श्रेयांस हुए प्रभु के गणधर।
मोक्ष प्राप्त कर सिद्धलोक में, पाया शिवपद अविनश्वर।।

प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ प्रभु! तुम्हें नमन हो बारम्बार।
गिरि कैलाश शिखर से तुमने, लिया सिद्धपद मंगलकार।।

नाथ आपके चरणाम्बुज में, श्रद्धा सहित प्रणाम करूं।
त्यागधर्म की महिमा पाऊं, मैं सिद्धों का धाम वरूं।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

स्थापना

(तांटक)

शुभ वैशाख शुक्ल तृतीया का, दिवस पवित्र महान हुआ।
दान धर्म की जय-जय गूंजी, अक्षय पर्व प्रधान हुआ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्!
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ:तिष्ठ:ठ:ठ:!
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्!

(वीर)

कर्मोदय से प्रेरित होकर, विषयों का व्यापार किया।
उपादेय को भूल हेय तत्वों, से मैंने प्यार किया।।
जन्म-मरण दुख नाश हेतु मैं, आदिनाथ प्रभु को ध्याऊं।
अक्षय-तृतीया पर्व दान का, नृप श्रेयांस सुयश गाऊं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(वीर)

न-वच-काया की चंचलता, कर्म आस्रव करती है।
चार कषायों की छलना ही, भवसागर दुःख भरती है।।
भवाताप के नाश हेतु मैं, आदिनाथ प्रभु को ध्याऊं।
अक्षय-तृतीया पर्व दान का, नृप श्रेयांस सुयश गाऊं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(वीर)

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

इन्द्रिय विषयों के सुख क्षणभंगुर, विद्युत-सम चमक अस्थिर।
पुण्य-क्षीण होते ही आते, महा असाता के दिन फिर।।
पद अखण्ड की प्राप्ति हेतु मैं, आदिनाथ प्रभु को ध्याऊं।
अक्षय-तृतीया पर्व दान का, नृप श्रेयांस सुयश गाऊं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(वीर)

शील विनय व्रत तप धारण, करके भी यदि परमार्थ नहीं।
बाह्य क्रियाओं में उलझे तो, वह सच्चा पुरुषार्थ नहीं।।
कामबाण के नाश हेतु मैं, आदिनाथ प्रभु को ध्याऊं।।
अक्षय-तृतीया पर्व दान का, नृप श्रेयांस सुयश गाऊं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(वीर)

विषय लोलुपी भोगों की, ज्वाला में जल-जल दुख पाता।
मृग-तृष्णा के पीछे पागल, नर्क-निगोदादिक जाता।।
क्षुधा व्याधि के नाश हेतु मैं, आदिनाथ प्रभु को ध्याऊं।।
अक्षय-तृतीया पर्व दान का, नृप श्रेयांस सुयश गाऊं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(वीर)

कर्म फलों का वेदन करके, सुखी दुखी जो होता है।
अष्ट प्रकार कर्म का बन्धन, सदा उसी को होता है।।
कर्म शत्रु के नाश हेतु मैं, आदिनाथ प्रभु को ध्याऊं।
अक्षय-तृतीया पर्व दान का, नृप श्रेयांस सुयश गाऊं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(वीर)

जो बन्धन से विरक्त होकर, बन्धन का अभाव करता।
प्रज्ञाछैनी ले बन्धन को, पृथक शीघ्र निज से करता।।
महामोक्ष-फल प्राप्ति हेतु, आदिनाथ प्रभु को ध्याऊं।
अक्षय-तृतीया पर्व दान का, नृप श्रेयांस सुयश गाऊं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(वीर)

पर मेरा क्या कर सकता है, मैं पर का क्या कर सकता।
यह निश्चय करने वाला ही, भव-अटवी के दुख हरता।।
पद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु मैं, आदिनाथ प्रभु को ध्याऊं।
अक्षय-तृतीया पर्व दान का, नृप श्रेयांस सुयश गाऊं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जयमाला

(दोहा)

चार दान दो जगत में, जो चाहो कल्याण।
औषधि भोजन अभय अरु सद् शास्त्रों का ज्ञान।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

पुण्य पर्व अक्षय तृतीया का, हमें दे रहा है यह ज्ञान।
दान धर्म की महिमा अनुपम, श्रेष्ठ दान दे बनो महान।।

दान धर्म की गौरव गाथा, का प्रतीक है यह त्योहार।
दान धर्म का शुभ प्रेरक है, सदा दान की जय-जयकार।।

आदिनाथ ने अर्ध वर्ष तक, किए तपस्या-मय उपवास।
मिली न विधि फिर अन्तराय, होते-होते बीते छह मास।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

मुनि आहारदान देने की, विधि थी नहीं किसी को ज्ञात।
मौन साधना में तन्मय हो, प्रभु विहार करते प्रख्यात।।

नगर हस्तिनापुर के अधिपति, सोम और श्रेयांस सुभ्रात।
ऋषभदेव के दर्शन कर, कृतकृत्य हुए पुलकित अभिजात।।

श्रेयांस को पूर्वजन्म का, स्मरण हुआ तत्क्षण विधिकार।
विधिपूर्वक पड़गाहा प्रभु को, दिया इक्षुरस का आहार।।

/Tatvacharcha GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

पंचाश्चर्य हुए प्रांगण में, हुआ गगन में जय-जयकार।
धन्य-धन्य श्रेयांस दान का, तीर्थ चलाया मंगलकार।।

दान-पुण्य की यह परंपरा, हुई जगत में शुभ प्रारम्भ।
हो निष्काम भावना सुन्दर, मन में लेश न हो कुछ दम्भ।।

चार भेद हैं दान धर्म के औषधि-शास्त्र-अभय-आहार।
हम सुपात्र को योग्य दान दे, बनें जगत में परम उदार।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

धन वैभव तो नाशवान हैं, अत: करें जी भर कर दान।
इस जीवन में दान कार्य कर, करें स्वयं अपना कल्याण।।

अक्षय तृतीया के महत्व को, यदि निज में प्रकटाएंगे।
निश्चित ऐसा दिन आएगा, हम अक्षय-फल पाएंगे।।

हे प्रभु आदिनाथ! मंगलमय, हमको भी ऐसा वर दो।
सम्यग्ज्ञान महान सूर्य का, अन्तर में प्रकाश कर दो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

अक्षय तृतीया पर्व की, महिमा अपरम्पार ।
त्याग धर्म जो साधते, हो जाते भव पार ।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha